डा. रजनी रंजन

अंगना में धूप

आज अंगना में धूप के देख के गाँव याद आ गईल । दादी के गाँव में भोरे भोरे घाम आ जात रहे । जइसहीं सूरूज के परछाईं आवे दादी के अंगना में डेरा डाला जात रहे । गाँव के बड़-बुजुर्ग लोगन के भी एकरे इन्तजार रहत रहे कि कब दादी बहरइहें। दादी के डेरा जमते चाय के दौर शुरू होत रहे त छोटकी चाची के मुँह पर बारह बज जात रहे लेकिन दादी के मजलिस खतम ना होत रहे । उहईं दादी के सब काम होत रहे । नहाये खाये खातिर पाँच मिनट के विसराम भर हो जाये त बहुते भईल। ओने छोटकी चाची के रेडियो बाजे लागत रहे- हे सुरूज देव ! आखिर हम राउर का बिगड़ले बानी कि रउरा एतना सबेरे आ जाएनी । कौने कसूर हमार बा कि राउर डेगो दऊरा के डेग हो गईल बा । हमरा के रउरा माफ करीं । अब दया करीं । हे दीनानाथ ! अब जाईं । ना त हमरे के भेज दीही ऊपर । अब त चचिया सास, ममिया सास, फुफिया सास के गोर लागे खातिर भी ताकत हमरा में नईखे बचल। एतना रामायण सुनत- सुनत चाचा के अंगना में आवहीं पड़त रहे । उनका आवते चाची मुँहवा अऊर फुल के कुप्पा हो जात रहे। उनकरा में कवनो अलबेली समा जात रहली काहे कि चाचा त बिना बंधले उनका खूंटा से बंधा जात रहलन । अपना सुरूजमुखी के मुरझात देख के ऊ अम्मा के लगे जाके तनी जोर से बोले के शुरू करीहें- का हो अम्मा ! तहार ई पंचायत कब बंद होई । जब मेहरिया बेहोश हो जाई ।

अंधार होत होत दादी के चाचा के साथ खूबे तू तू मैं मैं होखत रही जब तक ले बाबा आपन खड़ाऊ ना उठा लेत रहन । एकरा बाद त कुकुर बिलाईओ ना बोलत रहे । फेर बिहान होते उहे हाल। भोरे भोरे फेर चाची के हाथ में चाय देख के दादी के मनवा मोमबत्ती निअन पघिले लागत रहे- ए बाछी ! काल्ह तनी जादही चाय के फेरा लाग गईल।आ का करीं हम । हमार जवार में तहरा निअन कवनो के पतोह नईखे। हमार छाती तू ही लोग त चवरा

कईले बारू । रानी ! खिसीआ मत । तहरे पर त हमरा गुमान बा । आरे रे ! बिनईया ! ले जो रानी के ।तनी सिलेमा देखा लिआव । आ फुचकओ खिआ दीहे ।

एतना सुन के चाची त मने मन मिसरी हो जात रही । फिर कहत रही - का अम्मा! हम तनिक रउरा बेटा के साथे मजाके भर कईले रहनी । हमरा के माफ कर दीहीं । जाड़ा के घामे जइसन दादी आ चाची बारी । जैसे-जैसे सुरूजदेव में गरमाहट बढ़त रहे उ दुनो जन में गरमी चढ़ जात रहे । फिर गुम हो जात रहे । आ अंधार में ही खतम होके भोरे में ओस के बूंदन में घुल मिल के शान्त हो जात रहे ।

----------0000--------